Vol. 3, No.2 (July 2014) P. 57-62 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

ग्वालियर संगीत संस्कृति का भारतीय संगीत की संस्कृति पर प्रभाव

दीपक कुमार मित्तल और पी. एल. गोहदकर
राजा मानसिंह तोमर म्यूजिक एंड आर्ट यूनिर्वसिटी, ग्वालियर
Email: deepakmittal05@gmail.com

ग्वालियर में तोमरों का राज्य अवश्य समाप्त हुआ, परंतु उनका संगीत राष्ट्र व्यापी हो गया। तोमर वीणा छिन्न–भिन्न हो गई, परंतु उसकी स्वर लहरी हिन्दु–मुसलमान, सूफी–संत सबके मर्म को स्पर्श करती रही। संगीत के क्षेत्र में न काफिर रहा, न मलेक्ष, सब घुल मिलकर भारतीय संगीत के पोषक हो गए, ग्वालियर ध्रुवपद की गायकी उत्तर–दक्षिण सभी हिन्दू मुस्लिम दरबारों में फैल गयी। संगीत और भाषा के क्षेत्र में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति का समन्वय प्रारम्भ हुआ। बैजू, बख्शु, कर्ण, स्वामी हरिदास, महमूद लोहंग की सरस्वती हिंदू, तुर्क, मुग्ल सबकी सामान रूप से पूज्यनीय बन गयी।

इस्लाम शाह के ध्रुवपदः

ग्वालियर में तोमरों के राज्य के समाप्त हो जाने पर उनकी राज्य सभा के बड़े बड़े नायक और कुछ संत ही बाहर चले गए थे, तथपि संगीतज्ञों की परंपरा ग्वालियर से नितांत मिट नहीं गयी थी। शेर शाह सूरी का छोटा बेटा जलाल खां, इस्लाम शाह, के नाम से उसका उत्तराधिकारी हुआ। उसने ग्वालियर को ही अपनी राजधानी बना ली। इस्लाम शाह विद्वान था और फारसी में कविता भी करता था। वह ग्वालियर के ध्रुवपद शैली से इतना प्रभावित हुआ कि उसने स्वयं भी ग्वालियरी ध्रुवपदों की रचना की।[1] परंतु इसका प्रमाण अथवा वह ध्रुवपद आज कही उपलब्ध नहीं है। ग्वालियर के बाबा रामदास इस्लाम शाह के दरबार गायक थे। बाबा रामदास अपने पुत्र सूरदास सहित बैराम खां के आश्रय में पहुँचे थे और फिर वही से अकबर के दरबार में सम्मिलित हो गए।[2]

दौलत खां उजियालारू मालवा के सूबेदार सुजात खां का बड़ा बेटा दौलत खां उजियाला अपने युग का विचित्र व्यक्ति था। तारीखे – दाउदी के अनुसार वह सुजात खां का दत्तक पुत्र था और उसका नाम उजियाला इस कारण पड़ गया था कि रात्रि के समय और सुलतान के निवास के मध्य मार्ग पर दोनों ओर मशालें जलता था। संगीत के इतिहास में यह तथ्य महतवपूर्ण है कि तानसेन दौलत खां पर अनुरक्त थे। साथ ही ग्वालियर परंपरा के महान संगीतज्ञ तानसेन को दौलतखां का प्रश्रय प्राप्त था। दौलतखां के रूप की प्रशंसा में तानसेन ने दो ध्रुवपदों कि रचना की थी।[3]

विक्रमादित्य तोमर के पश्चात् तानसेन के दर्शन फारसी इतिहास में दौलतखां उजियाला के सन्दर्भ में होते है। जब इस्लाम शाह ने अपनी राजधानी ग्वालियर में बनाई थी तब दौलतखां उजियाला भी ग्वालियर आ गया था। इसी समय तानसेन भी उनके प्रश्रय में रहे। इस्लाम शाह सूरी के पश्चात् उसका साला आदिल शाह, अदली, अपने भांजे की हत्या कर सुल्तान बना। अदली स्वम् बहुत बड़ा संगीतज्ञ था। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायुनी के अनुसार तानसेन और सुजातखां का पुत्र मिया वायजीद, बाज बहादुर, दोनों अदली को उस्ताद मानते थे।[4]

आदिल शाह के राज्यकाल में उसके अमीरों ने विद्रोह प्रारंभ किया था। अदली को ग्वालियर छोड़कर बंगाल जाना पड़ा। सम्भवतः उसी समय तानसेन भी बांधवगड़ रीवा, के राजा रामचंद्र के पास चले गए। अकबर ने तानसेन कि ख्याति शेख मोहम्मद गोस के माध्यम से सुनी थी। सन 1562 ई० में अकबर ने रामचंद्र बघेला को विवश किया कि वह तानसेन को उसके पास भेज दे और तानसेन अकबर के दरबार में चले गए थे।[5]

तानसेन ने ग्वालियरी संगीत संस्कृति से मानसिंह तोमर, विक्रमादित्य तोमर, इस्लाम शाह, दौलत खां उजियाला, आदिल शाह, राजा रामचंद्र बघेला, और सम्राट अकबर सबकी राज्य सभाओं को बिभूषित किया और सब जगह ग्वालियरी संगीत का प्रभाव डाला था। तानसेन के माध्यम से ग्वालियरी संगीत राष्ट्र व्यापी हुआ, जब तक भारत के इतिहास में अकबर का नाम स्मरण होगा तबतक ग्वालियरी संगीत संस्कृति के रत्न तानसेन भी भुलाये ना जा सकेंगे। और उस समय तक अबुलफजल के ये शब्द भी स्मरण रखे जायेंगे- ''मियां तानसेन ग्वालियर वाले जिसके समान कोई गायक पिछले एक हजार वर्ष से भारत में नहीं हुआ।''

ग्वालियर ध्रुवपद – बाज बहादुर और रूपमती

सुजात खां का दूसरा पुत्र मियां वायजिद मालवा का सुल्तान था। उसने सारंगपुर को अपनी राजधानी बनाया यही उसका रूपमती से प्रेम हुआ। अकबर के संगीत प्रेम और सौन्दर्य –प्रेम के कारण रूपमती को आत्महत्या करनी पड़ी थी। बाज बहादुर को अंततोगत्वा अकबर की मंसब्दारी स्वीकार करनी पड़ी। अकबर के गायकों की सूची में अबुल फजल ने बाज बहादुर को नवां स्थान दिया है। बाज बहादुर और रूपमती ग्वालियरी ध्रुवपद संगीत के सिद्धस्त गायक थे।[6]

आदिल शाह और किताबे–नोरस

ग्वालियरी संगीत ने दक्षिण भारत में भारतीय संगीत और हिंदी भाषा के विकास के लिए जो कुछ भी किया उसका कुछ स्वरुप बीजापुर के सुल्तान इब्राहीम आदिल शाह सन् 1580 से 1627 ई०, की प्रवत्तियों से प्राप्त होता है। बीजापुर के सुल्तानों की राज भाषा फारसी थी और जनभाषा मराठी थी। इब्राहीम आदिल शाह का दरबार फारसी के प्रसिद्ध कवियों को आकर्षित कर रहा था। परन्तु उसने स्वयं अपनी रचना किताबे नोरस का मंगलाचरण इन शब्दों में लिखाः

नवरस स्वर जुग जग ज्योति आणि सर्व गुनी ।
यो सत सरसुती माता इब्राहीम प्रसाद भई दुनी ।।

इब्राहीम आदिल शाह ने अपना समस्त जीवन ध्रुवपद की साधना में बिताया, अपने प्रारंभिक जीवन में इब्राहीम इसी ध्रुवपद के प्रभाव में इस्लाम को त्याग हिन्दू बन जाने के मार्ग पर चल निकला था।[7] यह समाचार पाकर मदीना से मौलाना शिव गतिउल्लाह हुसैनी सुल्तान को समझने के लिए बीजापुर गए। सुल्तान ने मौलाना को समझाया कि वह सरस्वती की आराधना केवल अपना कंठ स्वर आकर्षक बनाने के लिए करता है। उसका इस्लाम के प्रति विश्वास अडिग है इस पर मौलाना ने सुल्तान को आशीर्वाद दिया और उसका स्वर और भी मधुर हो गया। अपनी स्वर साधना की सफलता के लिए आदिल शाह मौलाना के आशीर्वाद पर ही निर्भर रहा और उसने वाग्य्देवी सरस्वती की आराधना आगे बढ़ाई वह सरस्वती

और गणेश की वंदना करता ही रहा। ग्वालियरी ध्रुवपद संगीत शैली के साथ आदिल शाह ने ध्रुवपद के पदों के भाषा ग्वालियरी को भी बीजापुर में प्रस्थापित किया। वह ध्रुवपद के नौ रस में निमग्न हुआ, उसने नवरस के नाम से नवीन नगर बसाया, नौरस महल बनवाया और अपने हाथी का नाम भी नौरस रखा तथा किताबे–नौरस की रचना की।

मुगल दरबार में ग्वालियरी संगीतः

अपने समकालीन संसार में मुग्ल दरबार समृद्धतम था और उसका बैभव भी अपार था बाबर द्वारा स्थापित यह साम्रराज्य बैरम खान की तलवार द्वारा अत्यधिक सुद्रण बना, अकबर ने अपनी कूटनीति से उसका विस्तार किया और आगे वह लगभग समस्त भारत पर छा गया। इस दरबार की तड़क–भड़क में अनेक कलावन्तों का एकत्रित होना अवश्य भावी था तथापि उस युग के सर्वश्रेठ भारतीय नायक और गायक स्वेच्छा से मुगल दरबार में गए हों ऐसा प्रगट नहीं होता।

अकबरी दरबार में अनेक गायक इकट्ठे हो गए थे, उनमे भारत के अतिरिक्त ईरान व तुरान के संगीतज्ञ भी थे अबुल फजल ने आईने अकबरी में छत्तीस प्रमुख गायकों की सूची दी है जिनमें से पन्द्रह ग्वालियर के थे। अकबर के सर्वश्रेठ संगीतज्ञों को मुगल दरबार में कर लेने की प्रवत्ति का एक शुभ परिणाम अवश्य हुआ, भारत के इस दरबार में ग्वालियरी संगीत ध्रुवपद का ही बोलबाला रहा और ईरान और तुरान का संगीत अपना प्रभाव न जमा सका। मुगल दरबार में प्रतिस्तथा प्राप्त होने के कारण ग्वालियरी ध्रुवपद और उसके ग्वालियरी बोल राष्ट्र व्यापी प्रचार पा सके.

गुजरात में ध्रुवपदः

गुजरात के सुल्तान साहित्य और संगीत के पोषक रहे है। सुल्तान मुज्जफर शाह द्वितीय 1511–1526 ई०, स्वयं बहुत श्रेष्ठ गायक था तथा प्रत्येक वाद्य बजाने में निपुण था। उसने भारतीय शास्त्रीय संगीत का भी अध्ययन किया था। उसने एक बार कहा था "हिंदुयों के ग्रन्थ में लिखा है कि सर्वश्रेष्ठ कवियत्री, उत्कृष्ट स्वर वाली गायिका, प्रत्येक वादन में दक्ष सफल नर्तकी सरस्वती का रूप धारण कर सकती है। इसके अतिरिक्त उसके लिए अत्त्याधिक रूपवती भी होना आवश्यक है। इन गुणों से युक्त उसके दरबार में चंपा बाई नामक पातुर थी। उसके सरस्वती– नृत्य के लिए सुल्तान मुज्जफर शाह ने रत्नों से जड़ित स्वर्ण हंस का निर्माण कराया था। चंपा बाई ने काव्य– पाठ संगीत और नृत्य का अत्यंत उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। जिस किसी ने भी देखा वह चकित रह गया और कहने लगा संसार में किसी ने भी इस प्रकार का प्रदर्शन न किया होगा।

मुजफ्फर शाह का उत्तराधिकारी बहादुर शाह 1526–1537 ई०, भी संगीत का प्रश्रयदाता था। उसने अत्त्याधिक धनराशी देकर अनेक कलावन्तों को अपने दरबार में रखा था। यह भी उल्लेखनीय है कि मानसिंह तोमर के सर्वश्रेठ संगीताचार्य बैजू गुजरात से ही ग्वालियर आये थे। विक्रमादित्य की पराजय के पश्चात बैजू, बक्शु सहित अनेक कलाकार गुजरात में बहादुर शाह के पास पहुचं गए थे। इन कलाकारों ने गुजरात में ग्वालियरी ध्रुवपद संगीत शैली का पूर्ण विकास किया। इनके माध्यम से ग्वालियरी संगीत ही नहीं, हिंदी पद भी गुजरात में लोकप्रिय हुए नरसी मेहता और दयाराम ने हिंदी में हजारों पद इसी परंपरा में लिखे।[8]

ब्रज में ग्वालियरी ध्रुवपदः

बिहार और बंगाल में बौद्ध धर्म के रूप–परिवर्तन के परिणाम स्वरुप सिद्धयोगियों का एक संप्रदाय चल निकला था। पाल वंशीय राजा धर्मपाल 1708–1809 ई०, के समकालीन सर हपाथे, जिन्होंने 84 सिद्धांतो की परंपरा चलायी, इनके द्वारा लोक भाषा में लिखे गए गीतों के आधार पर संगीत की सृष्टि की गयी। इसी परंपरा में गोरखनाथ का नाथ पंथ परिवर्तित हुआ। नाथ पंथ ही योगी संगीत के प्रबल पोषक थे और उनका मत समस्त भारतवर्ष में फैला। परन्तु पूर्वी भारत में राधाकृष्ण के माध्यम से संगीत की निर्धरनी का श्रोत जयदेव के गीत गोविन्द में है। बंगाल के शेने वंशी लक्ष्मण सेन के आश्रित महान कवि–गायक जयदेव 1179–1205 ई० ने भारत के संगीत और साहित्य को बहुत अधिक प्रभावित किया।

ग्वालियर के अनेक गायक विशेषतः

जो धार्मिक प्रवत्ति के कृष्ण भक्त थे, गोकुल चले गए। श्रीनाथ जी के मंदिर में उन्हें आश्रय मिला। वल्लभाचार्य के पश्चात गोस्वामी विट्ठलनाथ पुष्टिमार्ग के आचार्य हुए। उनके समय में श्रीनाथजी की वांगमई पूजा का आधार ध्रुवपद संगीत बना। ग्वालियर ध्रुवपद गायन शैली की परंपरा ब्रज में आज भी जीवित है, इसका बहुत बड़ा श्रेय स्वामी हरिदास और पुष्टिमार्ग के कृष्ण मंदिरों को है।[9]

18वीं शताब्दी में तानसेन के वंशज और उनके शिष्य तीन विशेष घरानों में विभाजित हो गए। जयपुर के सैनिये घरानों ने डागुरवाणी के ध्रुवपद में विशेषता प्राप्त की। लखनऊ, बनारस और रामपुर में सैनिया घरानों की दो शाखाये हो गयी। विलास खां की परंपरा में जाफर खां, प्यार खां बासत खां ने ध्रुवपद की गौड़ हार वाणी का पालन किया। साथ ही वह डागुर वाणी को भी प्रयोग में लाये। मिश्री सिंह के वंश वाले सेनिये संगीतज्ञ दोनों डागर और खंडार वानियों को इस्तेमाल में लाने लगे और ध्रुवपद के घराने जो या तो सैनियों के शिष्य थे और या हरिदास स्वामी की शिष्य परंपरा के अनुयायी थे। इसी प्रकार मथुरा नाम के मशहुर ध्रुवपद गायक ने डागुर वाणी में ही विशेषता प्राप्त की थी। एक मशहुर गायक उस्ताद बैराम खां, राजस्थान के थे जिन्होंने डागुर वाणी का ही प्रचार किया।

इस प्रकार तानसेन की मृत्यु के बाद सैनियों के तीन मुख्य घराने बने, पहला घराना तो तानसेन के सबसे छोटे पुत्र विलास खां, तान तरंग, के नाम से बना, यह गौड़ हार बानी का सबसे प्रतिष्ठित घराना बना।[10] दूसरा सैनिया घराना तानसेन के दुसरे पुत्र सूरत सेन के नाम से बना, जो डागुर वाणी का घराना माना गया। उसके वंसज जयपुर में जाकर बस गए जहा पर उनकी शिष्य – परंपरा आज भी प्रचलित है। तीसरा सैनिया घराना मिश्री सिंह ने बनाया जो महाराजा समोखन सिंह का पुत्र था और जिसका विवाह तानसेन की पुत्री सरस्वती देवी से हुआ था। उसके वंश के वादकों ने वीणा के सबसे प्रधान घराने की स्थापना की जो डागुर और खंडार बानी के ध्रुवपद गायन में बहुत प्रवीण था ।

इन तीनो घरानों के अलावा मथुरा में ब्रजचंद्र और सूरदास ने भी अपने घराने बनाये। जिनके शिष्यों की गणना में बहुत से ब्राह्मण पंडित भी थे। चाँद खां और सूरज खां ने भी पंजाब में तिलवंडी के ध्रुवपद घराने को स्थापित किया। जिसने काफी ख्याति प्राप्त की इस प्रकार ग्वालियरी ध्रुवपद जिसकी प्रतिष्ठा तथा प्रचार में तानसेन ने अपना पूर्ण जीवन लगाया वह ग्वालियर से प्रभावित होता हुआ सम्पूर्ण भारत वर्ष की संगीत संस्कृति को प्रभावित करता रहा।

जिस प्रकार तोमर राजाओं ने ग्वालियरी ध्रुवपद शैली का अविष्कार कर उसे भारतवर्ष में प्रकाशित कर भारतीय संगीत पर ग्वालियरी ध्रुवपद की छाप जमायी ठीक इसी प्रकार 18वी शताब्दी में ग्वालियर के सिंधिया वंश ने सदारंग–अदारंग द्वारा अविष्कृत ख्याल शैली को ग्वालियर में आश्रय देकर ख्याल शैली का नवीन घराना स्थापित किया जो ग्वालियर घराने के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घराने के प्रथम संस्थापक बड़े मुहम्मद खां माने गए, परन्तु ग्वालियर ख्याल घराने को प्रतिष्ठित कराने में हद्दू खां, हस्सू खां व नत्थू खां का विशेष सहयोग रहा।

ग्वालियर गायकी के प्रवर्तक नत्थन पीर बक्श के शिष्य घग्घे खुदा बख्श आगरा जाकर बसे तथा ग्वालियर परंपरा के अनुसार आगरा घराने को स्थापित किया । जिसे उनके नाती उस्ताद फैयाज खां ने बहुत प्रसिद्धि दिलवाई।[11]

ग्वालियर परंपरा के हद्दू खां तथा हस्सू खां से लेकर आज तक ग्वालियर ख्याल गायकी का घराना बराबर वर्तमान में है तथा इसके विकास में ग्वालियर के अनेक कलाकारों ने अपना योगदान दिया है ग्वालियर परंपरा के गायक निसार हुसैन खां के शिष्य मेहंदी हुसैन, नजीर खां ने ग्वालियर परंपरा को जोधपुर में स्थापित किया। रामकृष्ण बुआ वझे जो निसार हुसैन खां के शिष्य थे, वे इस परंपरा को गोवा में ले गए। हस्सू खां के शिष्य वासुदेव राव जोशी जो महाराष्ट्र से संगीत सीखने ग्वालियर आये थे, इन्ही से बालकृष्ण बुआ, इचल करंजिकर ने शिक्षा प्राप्त कर महाराष्ट्र में ग्वालियर परंपरा स्थापित की। पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर इन्हीं के शिष्य थे, जिन्होंने ग्वालियर संगीत परंपरा का प्रचार भारतवर्ष के कोने कोने में संगीत विद्यालय खोलकर किया जो आज भी यथावत है। बडोदा के प्रशिद्ध गायक फैज मुहम्मद खां अपने आपको ग्वालियर घराने का शागिर्द मानते थे। पूना के भास्करराव बखले इन्ही के शिष्य थे, जिन्होंने पूना में ग्वालियर परंपरा का प्रचार किया।

ग्वालियर के निसार हुसैन खां के शिष्य शंकरराव पंडित का ग्वालियर परम्परा को प्रचारित करने में विशेष योगदान रहा है। आपके पुत्र डॉ कृष्णराव पंडित आज भी ग्वालियर परंपरा के गौरव माने जाते है। शंकर पंडित के ही शिष्य राजा भैया पूछ्वाले ने भी ग्वालियर परम्परा को प्रचारित करने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया था। इन्हीं की शिष्य परंपरा के कलाकार वर्तमान में भारतवर्ष के विभिन्न शहरों में ग्वालियर संगीत परंपरा एवं संस्कृति का प्रचार कर रहे है।[12]

इस प्रकार इन्हीं सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकलता है, की ग्वालियर संगीत संस्कृति की विभिन्न शैलियाँ, ध्रुवपद तथा ख्याल गायकी ने ग्वालियर में जन्म लेकर भारतवर्ष के संगीत की संस्कृति को प्रभावित किया है।

सन्दर्भ सूची :

1. डॉ० द्विवेदी – ग्वालियर के तोमर, पृ० 308
2. डॉ० द्विवेदी – ग्वालियर के तोमर, पृ० 309
3. प्रभु दयाल मीतल – संगीत सम्राट तानसेन पृ० 23
4. मुल्ला अब्दुल कादिर बदायुनी – मुन्त बुत्त तारिख, खण्ड–1 पृ० 55–57
5. ग्लैडविन – आईने अकबरी, पृ० 445
6. नजीर अहमद – किताबे नौरस, पृ० 95
7. डॉ० द्विवेदी – ग्वालियर के तोमर, पृ० 315
8. डॉ रिज़वी – हुमायूँ, भाग –2 पृ० 423

9. डॉ द्विवेदी – ग्वालियर के तोमर, पृ० 317
10. डॉ सुशील कुमार चौबे – हमारा आधुनिक संगीत, पृ० 49
11. डॉ परांजपे – संगीत बोध – पृ० 201
12. डॉ सुशील कुमार चौबे – हमारा आधुनिक संगीत, पृ० 91